दशलक्षण पर्व पर प्रतिदिन हेतु

तत्त्वार्थ सूत्र अर्घ्य

प्रथम अध्याय

सम्यग्दर्शन ज्ञान चरण है, मोक्षमार्ग सुखसार यहाँ।
उमास्वामी ने हमें बताया, नय प्रमाण और ज्ञान कहाँ॥
मन वच तन से शीश नवाऊँ, प्रथम पाठ का पाठ करूँ।
मोक्ष तत्त्व हो प्राप्त मुझे बस, अर्घ्य चढ़ाऊँ ध्यान धरूँ॥

ॐ ह्रीं जिनमुखोद्भव-उमास्वामीविरचित-तत्त्वार्थसूत्रे प्रथमोऽध्यायेभ्यो महाऽर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

द्वितीय अध्याय

औपशमिकादि पंच भाव का, बोध हमें जो करा दिया।
जीवों के भी भेद बताकर, जनम मृत्यु का नाश किया॥
मन वच तन से शीश नवाऊँ, द्वितीय पाठ का पाठ करूँ।
शुद्ध तत्त्व हो प्राप्त मुझे बस, अर्घ्य चढ़ाऊँ ध्यान धरूँ॥

ॐ ह्रीं जिनमुखोद्भव-उमास्वामीविरचित-तत्त्वार्थसूत्रे द्वितीयाऽध्यायेभ्यो महाऽर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

तृतीय अध्याय

पाप कमाते नरक में जाते, नरकों में कैसा दुःख पाते।
मध्यलोक में पर्वत नदियाँ, पढ़ सुन सब श्रद्धान जगाते॥
मन वच तन से शीश नवाऊँ, तृतीय पाठ का पाठ करूँ।
नरकों में न पतन हमारा, अर्घ्य चढ़ाऊँ ध्यान धरूँ॥

ॐ ह्रीं जिनमुखोद्भव-उमास्वामीविरचित-तत्त्वार्थसूत्रे तृतीयोऽध्यायेभ्यो महाऽर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

चतुर्थ अध्याय

पुण्य कमाते स्वर्ग में जाते, देवों में कैसा सुख पाते।
सूर्य चन्द्र का ज्ञान कराते, आयु वैभव भी दर्शाते॥
मन वच तन से शीश नवाऊँ, चतुर्थ पाठ का पाठ करूँ।
स्वर्ग संपदा लक्ष्य न भाई, अर्घ्य चढ़ाऊँ ध्यान धरूँ॥

ॐ ह्रीं जिनमुखोद्भव-उमास्वामीविरचित-तत्त्वार्थसूत्रे चतुर्थोऽध्यायेभ्यो महाऽर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

आकृति मो.: 9981331700

पंचम अध्याय

जीवादिक द्रव्यों की गाथा, परोपकार कर मन पाता।
अणु स्कंध बंध सब जानों, गुरुओं की बातों को मानों॥
मन वच तन से शीश नवाऊँ, पंचम पाठ का पाठ करूँ।
अजीव को हम हेय है जानें, अर्घ्य चढ़ाऊँ ध्यान धरूँ॥

ॐ ह्रीं जिनमुखोद्भव-उमास्वामीविरचित-तत्त्वार्थसूत्रे पंचमोऽध्यायेभ्यो महाऽर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

छटवां अध्याय

किन भावों से कर्म है आते, योग से जीव के कैसे नाते।
तीर्थंकर का पद है पाना, सोलह कारण भावना भाना॥
मन वच तन से शीश नवाऊँ, षष्ठम् पाठ का पाठ करूँ।
आश्रव दुःख का कारण जाने, अर्घ्य चढ़ाऊँ ध्यान धरूँ॥

ॐ ह्रीं जिनमुखोद्भव-उमास्वामीविरचित-तत्त्वार्थसूत्रे षष्ठमोऽध्यायेभ्यो महाऽर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

सातवां अध्याय

पांच पाप को धर्म न माने, पांच व्रतों का स्वरूप जानें।
अतिचार ना भावना भायें, मोक्षमहल की ओर ही जायें॥
मन वच तन से शीश नवाऊँ, सप्तम पाठ का पाठ करूँ।
व्रत धारण ही सुख का साधन, अर्घ्य चढ़ाऊँ ध्यान धरूँ॥

ॐ ह्रीं जिनमुखोद्भव-उमास्वामीविरचित-तत्त्वार्थसूत्रे सप्तमोऽध्यायेभ्यो महाऽर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

आठवां अध्याय

मिथ्यादर्शन आदिक जानों, बंध दुःखों का कारण मानों।
अष्टकर्म का भेद बताया, स्थिति का भी ज्ञान कराया॥
मन वच तन से शीश नवाऊँ, अष्टम् पाठ का पाठ करूँ।
बंध तत्त्व से हमें बचाओ, अर्घ्य चढ़ाऊँ ध्यान धरूँ॥

ॐ ह्रीं जिनमुखोद्भव-उमास्वामीविरचित-तत्त्वार्थसूत्रे अष्टमोऽध्यायेभ्यो महाऽर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

नवम् अध्याय

गुप्ति समिति संवर के कारण, पाप कर्म का करते वारण।
ध्यान के भेद प्रभेद भी जाने, सूत्र ग्रंथ पढ़ सम्यक् पाने॥
मन वच तन से शीश नवाऊँ, नवम् पाठ का पाठ करूँ।
संवर निर्जरा तत्त्व को जाने, अर्घ्य चढ़ाऊँ ध्यान धरूँ॥

ॐ ह्रीं जिनमुखोद्भव-उमास्वामीविरचित-तत्त्वार्थसूत्रे नवमोऽध्यायेभ्यो महाऽर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

दशम अध्याय

मोक्ष तत्त्व ही लक्ष्य हमारा, सूत्र ग्रंथ का मिले सहारा।
सिद्ध प्रभु का ध्यान लगाना, पाप त्याग मुक्ति पद पाना॥
मन वच तन से शीश नवाऊँ, दशम पाठ का पाठ करूँ।
सब तत्त्वों का सार ही पाऊँ, अर्घ्य चढ़ाऊँ ध्यान धरूँ॥

ॐ ह्रीं जिनमुखोद्भव-उमास्वामीविरचित-तत्त्वार्थसूत्रे दशमोऽध्यायेभ्यो महाऽर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

आकृति मो.: 9981331700

दशलक्षण पर्व पर प्रतिदिन हेतु

तत्त्वार्थ सूत्र अर्घ्य

प्रथम अध्याय

सम्यग्दर्शन ज्ञान चरण है, मोक्षमार्ग सुखसार यहाँ
उमास्वामी ने हमें बताया, नय प्रमाण और ज्ञान कहाँ॥
मन वच तन से शीश नवाऊँ, प्रथम पाठ का पाठ करूँ।
मोक्ष तत्त्व हो प्राप्त मुझे बस, अर्घ्य चढ़ाऊँ ध्यान धरूँ॥

ॐ ह्रीं जिनमुखोद्भव-उमास्वामीविरचित-तत्त्वार्थसूत्रे प्रथमोऽध्यायेभ्यो महाऽर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

द्वितीय अध्याय

औपशमिकादि पंच भाव का, बोध हमें जो करा दिया।
जीवों के भी भेद बताकर, जनम मृत्यु का नाश किया॥
मन वच तन से शीश नवाऊँ, द्वितीय पाठ का पाठ करूँ।
शुद्ध तत्त्व हो प्राप्त मुझे बस, अर्घ्य चढ़ाऊँ ध्यान धरूँ॥

ॐ ह्रीं जिनमुखोद्भव-उमास्वामीविरचित-तत्त्वार्थसूत्रे द्वितीयाऽध्यायेभ्यो महाऽर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

तृतीय अध्याय

पाप कमाते नरक में जाते, नरकों में कैसा दुःख पाते।
मध्यलोक में पर्वत नदियाँ, पढ़ सुन सब ब्रह्मान जगाते॥
मन वच तन से शीश नवाऊँ, तृतीय पाठ का पाठ करूँ।
नरकों में न पतन हमारा, अर्घ्य चढ़ाऊँ ध्यान धरूँ॥

ॐ ह्रीं जिनमुखोद्भव-उमास्वामीविरचित-तत्त्वार्थसूत्रे तृतीयोऽध्यायेभ्यो महाऽर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

चतुर्थ अध्याय

पुण्य कमाते स्वर्ग में जाते, देवों में कैसा सुख पाते।
सूर्य चन्द्र का ज्ञान कराते, आयु वैभव भी दर्शाते॥
मन वच तन से शीश नवाऊँ, चतुर्थ पाठ का पाठ करूँ।
स्वर्ग संपदा लक्ष्य न भाई, अर्घ्य चढ़ाऊँ ध्यान धरूँ॥

ॐ ह्रीं जिनमुखोद्भव-उमास्वामीविरचित-तत्त्वार्थसूत्रे चतुर्थोऽध्यायेभ्यो महाऽर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

आकृति मो.: 9981331700

पंचम अध्याय

जीवादिक द्रव्यों की गाथा, परोपकार कर मन पाता।
अणु स्कंध बंध सब जानों, गुरुओं की बातों को मानों॥
मन वच तन से शीश नवाऊँ, पंचम पाठ का पाठ करूँ।
अजीव को हम हेय है जानें, अर्घ्य चढ़ाऊँ ध्यान धरूँ॥

ॐ ह्रीं जिनमुखोद्भव-उमास्वामीविरचित-तत्त्वार्थसूत्रे पंचमोऽध्यायेभ्यो महाऽर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

छटवां अध्याय

किन भावों से कर्म है आते, योग से जीव के कैसे नाते।
तीर्थंकर का पद है पाना, सोलह कारण भावना भाना॥
मन वच तन से शीश नवाऊँ, षष्ठम् पाठ का पाठ करूँ।
आश्रव दु:ख का कारण जाने, अर्घ्य चढ़ाऊँ ध्यान धरूँ॥

ॐ ह्रीं जिनमुखोद्भव-उमास्वामीविरचित-तत्त्वार्थसूत्रे षष्ठमोऽध्यायेभ्यो महाऽर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

सातवां अध्याय

पांच पाप को धर्म न माने, पांच व्रतों का स्वरूप जानें।
अतिचार ना भावना भायें, मोक्षमहल की ओर ही जायें॥
मन वच तन से शीश नवाऊँ, सप्तम पाठ का पाठ करूँ।
व्रत धारण ही सुख का साधन, अर्घ्य चढ़ाऊँ ध्यान धरूँ॥

ॐ ह्रीं जिनमुखोद्भव-उमास्वामीविरचित-तत्त्वार्थसूत्रे सप्तमोऽध्यायेभ्यो महाऽर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

आठवां अध्याय

मिथ्यादर्शन आदिक जानों, बंध दु:खों का कारण मानों।
अष्टकर्म का भेद बताया, स्थिति का भी ज्ञान कराया॥
मन वच तन से शीश नवाऊँ, अष्टम् पाठ का पाठ करूँ।
बंध तत्त्व से हमें बचाओ, अर्घ्य चढ़ाऊँ ध्यान धरूँ॥

ॐ ह्रीं जिनमुखोद्भव-उमास्वामीविरचित-तत्त्वार्थसूत्रे अष्टमोऽध्यायेभ्यो महाऽर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

नवम् अध्याय

गुप्ति समिति संवर के कारण, पाप कर्म का करते वारण।
ध्यान के भेद प्रभेद भी जाने, सूत्र ग्रंथ पढ़ सम्यक् पाने॥
मन वच तन से शीश नवाऊँ, नवम् पाठ का पाठ करूँ।
संवर निर्जरा तत्त्व को जाने, अर्घ्य चढ़ाऊँ ध्यान धरूँ॥

ॐ ह्रीं जिनमुखोद्भव-उमास्वामीविरचित-तत्त्वार्थसूत्रे नवमोऽध्यायेभ्यो महाऽर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

दशम अध्याय

मोक्ष तत्त्व ही लक्ष्य हमारा, सूत्र ग्रंथ का मिले सहारा।
सिद्ध प्रभु का ध्यान लगाना, पाप त्याग मुक्ति पद पाना॥
मन वच तन से शीश नवाऊँ, दशम पाठ का पाठ करूँ।
सब तत्त्वों का सार ही पाऊँ, अर्घ्य चढ़ाऊँ ध्यान धरूँ॥

ॐ ह्रीं जिनमुखोद्भव-उमास्वामीविरचित-तत्त्वार्थसूत्रे दशमोऽध्यायेभ्यो महाऽर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

आकृति मो.: 9981331700